

आपके दिल में क्या भरता है?

मत्ती 12:34-37

लूका 6:45

यीशु के दृष्टांत

ये अंश संक्षिप्त हैं, लेकिन थोड़े भिन्न हैं। आप चाहें तो मत्ती के अध्याय से पढ़ाना चुन सकते हैं क्योंकि इसमें थोड़ी अधिक जानकारी है।

यीशु अक्सर हृदय की स्थिति के बारे में सिखाते थे, और लगातार इसी विषय पर लौटते थे।

वह मुख्य रूप से फरीसियों और उस समय के धार्मिक नेताओं और शासकों से बात कर रहे थे। वे पुराने नियम में मूसा द्वारा दिए गए नियमों को जानते थे, और उनका मुख्य उद्देश्य इन नियमों का पालन करना था। लेकिन यीशु ने बार-बार यही बताया कि उनके हृदय शुद्ध नहीं थे, और वे गलत इरादों से काम कर रहे थे। वे सब कुछ स्वार्थ के लिए कर रहे थे।

मत्ती का सुसमाचार हमें दिखाता है कि इस विशेष घटना में यीशु फरीसियों को जवाब दे रहे थे। यह उपदेश तब शुरू हुआ जब फरीसियों ने यीशु पर दुष्ट आत्माओं को निकालने के कारण उन्हें शैतानों का सरदार होने का आरोप लगाया। उन्होंने ये बातें सीधे यीशु से नहीं कहीं, लेकिन यीशु उनके विचारों को समझ गए और उन्होंने उन बातों के उदाहरण देने शुरू किए जो देखने में विरोधाभासी लगती थीं। यीशु ने उदाहरण देकर समझाया कि जो राज्य आपस में ही लड़ता है, वह टिक नहीं सकता, वह स्वयं ही नष्ट हो जाएगा या बिखर जाएगा।

वह पेड़ों की बात करता है, और बताता है कि अच्छे पेड़ों पर अच्छे फल लगते हैं।

अच्छे पेड़ से बुरा फल नहीं आता और बुरे पेड़ से अच्छा फल नहीं आता। यीशु दोहरे अर्थ के साथ बोल रहे हैं; वे केवल पेड़ों के बारे में नहीं बोल रहे हैं। वह सीधे आपके शब्दों के बारे में बताते हुए इसका सारांश देते हैं, और वे आपके दिल को कैसे प्रकट करते हैं।

चर्चा करना:

अगर किसी सेब के पेड़ पर खराब फल लगे हों, और सारे सेब सड़े हुए हों और उनका स्वाद खराब हो, तो आप क्या सोचेंगे? क्या आप सेबों का ही इलाज करने की कोशिश करेंगे, या आप यह पता लगाने की कोशिश करेंगे कि पेड़ में क्या खराबी है? यदि आप पौधों का अध्ययन करते, तो आपको पता चलता कि समस्या पेड़ में थी, फल में नहीं। क्या इसे बेहतर मिट्टी की आवश्यकता है? क्या इस पर कीड़ों का हमला हुआ है? इसके संभावित समाधान क्या हो सकते हैं?

यीशु कहते हैं, यदि तुम दुष्ट हो तो अच्छी बातें कैसे कह सकते हो?

मन में जो भरा होता है, वही मुख से निकलता है।

एक अन्य अनुवाद कहता है, क्योंकि मुख से हृदय की भावनाएँ ही निकलती हैं।

आपके दिल में जो है, वह बोलते समय बाहर आ जाता है। जो बातें आपके भीतर से निकलती हैं, वही आपका फल हैं, ठीक वैसे ही जैसे पेड़ पर फल लगते हैं। आपके दिल में जो है, वह स्वाभाविक रूप से बाहर आ जाता है, वह बह निकलता है।

चर्चा करना:

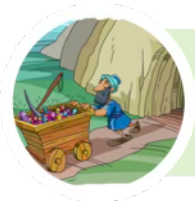
अगर आपके पास दूध से भरा एक पूरा कप है और वह गिर जाता है, तो उसमें से क्या निकलेगा? अगर आपके पास चाय से भरा एक कप है, तो उसमें से क्या निकलेगा? कप में जो कुछ भी है, वही बाहर निकलेगा। यही बात आपके शब्दों पर भी लागू होती है। आपके दिल में जो कुछ भी है, बोलते समय वही बाहर आ जाता है।

आप कैसे जान सकते हैं कि किसी व्यक्ति के दिल में क्या है?

आप कैसे जान सकते हैं कि वे वास्तव में क्या सोच रहे हैं? एक व्यक्ति कुछ समय के लिए अपनी सच्ची भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर सकता है, लेकिन अंततः उसके दिल में जो कुछ भी है वह उसके शब्दों में प्रकट हो जाता है। उसके शब्द ही उसकी असलियत बता देते हैं। यदि उसका हृदय बुराई से भरा है, तो वह अच्छी बातें नहीं बोलेगा। व्यक्ति की सच्ची भावनाएँ उसके शब्दों में झलकती हैं। तुम्हारे शब्द ही तुम्हारे भीतर से निकलते हैं, और वे ही तुम्हें अपवित्र करते हैं - वे ही व्यक्ति को भ्रष्ट करते हैं, या उसे दूषित करते हैं (मत्ती 15:11, 16-20)।

यीशु ने कहा,





आपके दिल में क्या भरता है?

एक नेक इंसान अपने हृदय के अच्छे खजाने से अच्छी चीजें निकालता है, और एक बुरा इंसान अपने हृदय के बुरे खजाने से बुरी चीजें निकालता है। (मती 12:35; लूका 6:45)।

चर्चा करना:

आपका हृदय क्या है? यह आपके मन का वह हिस्सा है जिसमें आपके विचार, आपकी भावनाएं और आपका चरित्र समाहित है।

मती 12:34 में यूनानी भाषा में हृदय के लिए इस्तेमाल किया गया मूल शब्द हृदय से संबंधित चिकित्सा शब्दावली, जैसे कि कार्डियक और कार्डियोवैस्कुलर, का स्रोत है। इसका अर्थ शरीर का वह अंग है जो रक्त संचारित करता है, लेकिन इसका अर्थ संपूर्ण शारीरिक और आध्यात्मिक जीवन का केंद्र भी है। यह आत्मा या मन है, विचारों, भावनाओं, इच्छाओं, लालसाओं, स्नेह और उद्देश्यों का स्रोत और केंद्र है। यह समझ, इच्छाशक्ति और चरित्र है, सभी स्नेह और भावनाओं का केंद्र है, चाहे वे अच्छी हों या बुरी। यह किसी भी चीज़ का केंद्रीय या सबसे भीतरी भाग है। यही आपका आंतरिक स्वरूप है।

आपके हृदय से ही आपके द्वारा बोले गए शब्दों का स्रोत निकलता है।

फिर यीशु कहते हैं कि हम अपने हर व्यर्थ शब्द का हिसाब देंगे। परन्त्याय का दिन।

चर्चा करना:

इसका क्या अर्थ है? एक बेकार शब्द का क्या अर्थ है? कुछ अनुवादों में इसे "लापरवाह" कहा गया है।

यीशु द्वारा प्रयुक्त मूल शब्द का अर्थ निष्क्रिय, आलसी और निष्फल था।

यह एक ऐसा शब्द होगा जो अपना उद्देश्य पूरा नहीं करेगा।

ईश्वर के लिए शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उन्होंने शब्दों का प्रयोग करके दुनिया की रचना की, और शब्दों में रचनात्मक शक्ति होती है।

हमारे शब्द सृजन करने के लिए होते हैं, विनाश करने के लिए नहीं। उनका उद्देश्य कुछ हासिल करना होता है। यीशु यहाँ जिस बारे में बात कर रहे हैं वह केवल "बातें" हैं।

चर्चा करना:

कुछ उदाहरण ऐसे हो सकते हैं जिनमें बातचीत निरर्थक होती है?

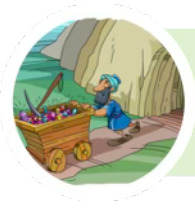
व्यर्थ की बातें, विनाशकारी बातें, गपशप, नकारात्मक बातें करना, या ऐसी कोई भी बात करना जो ईश्वर के वचनों के विरुद्ध हो, पर चर्चा न करें।

फिर यीशु यह कहकर अपनी बात समाप्त करते हैं, तुम्हारे शब्दों से ही तुम्हें न्यायसंगत ठहराया जाएगा, और तुम्हारे शब्दों से ही तुम्हें दोषी ठहराया जाएगा।

एक दिन हमें परमेश्वर को अपने सारे व्यर्थ वचनों का हिसाब देना होगा (मती 12:36)। यह एक गंभीर विचार है! अपने शब्दों और अपनी वाणी पर ध्यान देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम इसे महज़ बातचीत समझते हैं, लेकिन परमेश्वर इसे कहीं अधिक गंभीरता से लेते हैं! हमें अपने विचारों, अपने हृदय में उठने वाली बातों और अपनी जुबान पर नियंत्रण रखना होगा।

नीतिवचन 4:23 कहता है, "अपने हृदय की रक्षा सर्वथा करो, क्योंकि वही तुम्हारे जीवन की दिशा निर्धारित करता है।"

वाह! यह तो बेहद महत्वपूर्ण है! कई लोग कहते हैं कि उनके साथ घटी घटनाओं ने उनके जीवन का परिणाम तय किया; दूसरों के कारण ही वे ऐसे बने और उन्होंने ऐसे काम किए। लेकिन परमेश्वर कहते हैं कि आप अपने हृदय में जो कुछ भी स्वीकार करते हैं, उसी से



आपके दिल में क्या भरता है?

आपका जीवन तय होता है। आपका जीवन चाहे जैसा भी हो, आप ही तय कर सकते हैं कि आप कैसी प्रतिक्रिया देंगे। क्या आप इसे परमेश्वर को सौंप देंगे और उन्हें इसकी देखभाल करने देंगे, या अपने हृदय में कड़वाहट को बढ़ने देंगे? हमारे हृदय में जो कुछ होता है, वह हमारे बोलने से प्रकट होता है और हमारे भीतर की बहुत सी बातें उजागर करता है। हमारे शब्द या तो हमारे लिए जीवन का निर्माण करेंगे या मृत्यु का (नीतिवचन 18:21)। आपके शब्द रचनात्मक बीजों के समान हैं जो आपके बोलने पर बढ़ते हैं।

चर्चा करना:

क्या आप स्वस्थ हृदय पाना चाहते हैं? हम स्वस्थ हृदय कैसे पा सकते हैं?

हमें ईश्वर के वचनों को सुनना चाहिए और उन्हें अपने हृदय के केंद्र में रखना चाहिए;
वे हमारे शरीर के लिए जीवन और स्वास्थ्य हैं। नीतिवचन 4:20-22

एक धर्मी व्यक्ति बोलने से पहले अपने उत्तर का अध्ययन करेगा। नीतिवचन 15:28

बुद्धिमान व्यक्ति का हृदय उसके मुख को शिक्षा देता है...नीतिवचन 16:23

अपने शब्दों के महत्व को समझें: आप अपने मुंह के शब्दों से फँस जाते हैं, आप अपने मुंह के शब्दों से पकड़े जाते हैं (नीतिवचन 6:2)।

कहानी में यीशु



यीशु ने हमेशा हृदय संबंधी मुद्दों पर ध्यान दिया।

यहूदी सही काम करने और सभी कानूनों का पालन करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे, लेकिन उन्होंने उद्देश्यों पर विचार नहीं किया।

यीशु ने कहा कि यह रवैये के बारे में है.

यह कानून के पत्र का पालन करने के बारे में नहीं था। वे सही काम कर रहे थे और पूरी बात से चूक रहे थे। यीशु ने कहा कि पूरे कानून को इन दो आज्ञाओं में संक्षेपित किया जा सकता है:

...तुम अपने परमेश्वर यहोवा से अपने पूरे मन, अपनी पूरी आत्मा और अपने पूरे विवेक से प्रेम करो। यही पहली और सबसे बड़ी आज्ञा है। और दूसरी आज्ञा भी इसी के समान है, 'तुम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।' इन दो आज्ञाओं पर ही समस्त व्यवस्था और भविष्यवाणियाँ टिकी हैं। मत्ती 22:37-40



पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

37. खोया हुआ सिक्का

1. जब इस महिला का सिक्का खो गया तो उसने क्या किया?
2. जब उसे वह चीज़ मिली तो उसने क्या किया?
3. उसने किसे बताया?
4. जब कोई पश्चाताप करता है तो परमेश्वर के दूत क्या करते हैं?

सपन्याह 3:17

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ हैं। वह शक्तिशाली सैनिक सा हैं। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। वह दिखायेगा कि वह तुम से कितना प्यार करता है। वह दिखायेगा कि वह तुम्हारे साथ कितने प्रसन्न है। वे हसेगा और तुम्हारे बारे में ऐसे प्रसन्न होगा

38. खोया हुआ बेटा

रोमियों 8:35-39 पढ़ें

1. कौन सी बात हमें ईश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है?
2. क्या मृत्यु हमें ईश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है?
3. हमें स्वर्गदूतों, स्वर्ग के शासकों या किसी और द्वारा अलग नहीं किया जा सकता है?
4. अब हम अलग नहीं हो सकते, है ना?

1 यूहन्ना 4:7-8

हे प्यारे मित्रों, हम परस्पर प्रेम करें। क्योंकि प्रेम परमेश्वर से मिलता है और हर कोई जो प्रेम करता है, वह परमेश्वर की सन्तान बन गया है और परमेश्वर को जानता है। 8 वह जो प्रेम नहीं करता है, परमेश्वर को नहीं जान पाया है। क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है।

39. आपके दिल में क्या भरता है?

1. हमारे शब्द कहाँ से आते हैं?
2. एक अच्छे इंसान के दिल से क्या निकलता है?
3. एक दुष्ट व्यक्ति के हृदय से क्या निकलता है?
4. हम परमेश्वर के सामने किन बातों का हिसाब देंगे?

लूका 6:45

एक अच्छा मनुष्य उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी से अच्छी बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य, जो उसके मन में बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता है। क्योंकि एक मनुष्य मुँह से वही बोलता है, जो उसके हृदय से उफन कर बाहर आता है।

40. अंगूर के बाग में काम करने वाले मज़दूर

इफिसियों 2:8-9 पढ़ें

1. हमें किसने बचाया है?
2. हमें किस चीज़ से बचाया गया है?
3. क्या हमने जो कुछ किया, उससे हमारी जान बच गई?
4. हमें ईश्वर से क्या मुक्ति मिली?
5. यदि यह हमारे कर्मों से होता तो हम क्या कर पाते?

तीतुस 3:5

5 उसने हमारा उद्धार किया। यह हमारे निर्दोष ठहराये जाने के लिये हमारे किसी धर्म के कामों के कारण नहीं हुआ बल्कि उसकी करुणा द्वारा हुआ। उसने हमारी रक्षा उस स्नान के द्वारा की जिसमें हम फिर पैदा होते हैं और पवित्र आत्मा के द्वारा नये बनाए जाते हैं।

